www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समृद्धि के लिए दूरदर्शी नीति अपनायी जाय

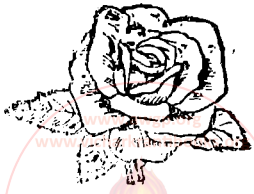

--श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समृद्धि के लिए दूरदर्शी नीति अपनायी जाय

आदि मानव ने जब एक पत्थर पर दूसरा पत्थर मारा तो अग्निकी चिनगारी फूट पड़ी और महत्वपूर्ण आविष्कार हाथ लगा—आग जलाने की कला का। वन्य पशुओं की भाँति नंग-धड़ंग घूमने वाले आदि मानव को जीवन यापन के लिए एक आवश्यक साधन उपलब्ध होते ही कौतूहल बढ़ा। कौतूहल ने बुद्धि के सदुपयोग और पुरुषार्थ के लिए प्रेरित किया। सभ्यता की ओर असभ्य मानव के प्रयास चल पड़े और तब से लेकर अब तक एक से बढ़ कर एक साधन उपलब्ध होते गये। जीवन यापन के लिए अनेकानेक विद्याओं भोजन पकाने, वस्त्र बनाने, मकान विनिर्मित करने जैसी आवश्यक जानकारियों से लेकर छोटे-मोटे दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के निर्माण तक की कलायें विकसित हुईं। ये विधायें एवं कलायें मानवी विकास में असामान्य रूप से सहयोगी सिद्ध हुई। कला एवं तकनीक जब तक विकेन्द्रित थी और मनुष्य की सहचरिणी थी, उसके श्रम-कौशल को बढ़ाने में सहायक थी जब तक मनुष्य जाति के लिए उपयोगी सिद्ध हुई। तकनीकी साधन उस सीमा तक सार्थक हैं जब तक वे मनुष्य को श्रमशील और कौशल युक्त बनाते तथा अधिक से अधिक व्यक्ति उनसे लाभान्वित होते हैं। जो तकनीक एवं विकास के साधन मनुष्य के हाथों से श्रम और उसका कौशल छीन कर विशाल काय मशीनों कारखानों में केन्द्रित कर दे, वह कालान्तर में समाज का हित नहीं अहित करती और अनेकानेक समस्याओं को जन्म देती है।

पिछले दिनों यही हुआ। प्रगतिशील कहे जाने वाले देशों में उत्पादन बढ़ाने के लिए औद्योगीकरण की होड़ चली। उत्पादन बढ़ा, इस तथ्य से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन्कार नहीं किया जा सकता किन्तु इस सत्य को भी झुठलाया नहीं जा सकता कि मनुष्य के हाथों से श्रम और कौशल छिनकर दैत्याकार मशीनों में सिमटता गया। सीमित आबादी वाले देशों में जहाँ कि बेकारी, गरीबी की समस्या नहीं है। वहां तो एक सीमा तक उनकी भौतिक प्रगति में सहायक सिद्ध हुआ। यद्यपि एकांकी भौतिकता से उत्पन्न अनेकानेक अभिशाप तो उनके साथ में जुड़ गये हैं किन्तु जिन देशों की आबादी अधिक है—गरीबी एवं बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जो ग्रस्त हैं उनके लिए तो यह अन्धानुकरण की प्रवृत्ति सर्वाधिक हानिकारक सिद्ध हुई।

देश की आर्थिक प्रगति के लिए वह योजना ही अधिक सफल हो पाती है जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों को लाभ पहुँचता हो। यन्त्र उस सीमा तक सहयोगी हैं जहाँ तक वे सामूहिक प्रगति में सहायक हों। प्रगति मात्र उत्पादन बढ़ने से नहीं होती वरन् इस तथ्य पर अवलम्बित है कि अधिक से अधिक व्यक्तियों के श्रम एवं कौशल का सदुपयोग हो, जिसके माध्यम से अधिक व्यक्ति रोजगार प्राप्त कर सकें। अर्थनीति की सफलता ऐसे ही साधनों पर अवलम्बित है जिनमें उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखा गया हो, नीति मात्र उत्पादन की रही हो तो वह कुछ सीमित व्यक्तियों जिनके हाथों में ऐसे औद्योगिक साधन हैं को तो लाभ पहुँचा सकती है, सार्वजनीन और सर्वतोमुखी सामाजिक प्रगति का आधार नहीं बन सकती।

जिन देशों में गरीबी और बेकारी की समस्या नहीं है उनके लिए भी औद्योगीकरण अन्ततः हानिकारक सिद्ध हुआ है। प्रदूषण एवं इससे उत्पन्न अनेकानेक रोग तो इन दिनों बहुचर्चित हैं ही। सबसे बड़ी हानि यह हुई है कि यान्त्रिक जीवन क्रम में वहां के निवासी सहज प्रकृति—अनुकूल जीवन से दिन प्रतिदिन दूर हटते जा रहे हैं और स्वाभाविक सहज जीवन क्रम से उपलब्ध होने वाले आनन्द दुर्लभ हो गये हैं। प्रस्तुत इस समस्या से चिन्तित प्रसिद्ध विचारक 'टामस एक्विनस' ने अपनी व्यथा इन शब्दों में व्यक्त की है - 'मनुष्य दिमाग और हाथों वाला प्राणी है, जिसे सबसे अधिक आनन्द अपने दिमाग और मस्तिष्क की सहायता से किये जाने वाले सृजनात्मक,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपयोगी और उत्पादक काम करने से मिलता है। इस मनो-वैज्ञानिक तथ्य की उपेक्षा होती जा रही है। दस्तकारी से अपने कौशल के उपयोग द्वारा आनन्द प्राप्त करने की तुलना में समृद्ध बनने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह इस सीमा तक बढ़ चली है कि मनुष्य सोचने लगा है कि उसे इतना धन वान होना चाहिए कि थोड़ा भी श्रम न करना पड़े। निस्सन्देह यह स्थिति यन्त्रीकरण की पराकाष्ठा होगी—जिसके द्वारा श्रम तो नहीं करना होगा किन्तु मनुष्य का पुरुषार्थ एवं कौशल कुण्ठित होकर जड़वत् हो जायेगा। प्रकारान्तर से यह विकास का नहीं पराभव का चिन्ह होगा।"

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं विचारक 'ई० एफ० शूमाकर' लिखते हैं कि—',हाथ और मस्तिष्क के सदुपयोग से किए जाने वाले पुरुषार्थ से जो आनन्द और सन्तोष की प्राप्ति हो सकती थी,मशीनीकरण ने मनुष्य को उससे वंचित कर दिया है। लगभग सारा ही उत्पादन एक अमानवीय और अप्राकृतिक प्रक्रिया बनकर रह गया है जिशसे आदमी को किसी महत्वपूर्ण उपलब्धि का बोध नहीं होता उल्टे वह शून्यता अनुभव करता है। कारखाने से निर्जीव वस्तुयें तो बन सँवर कर निकलती हैं किन्तु मनुष्य अपनी मौलिकता से उतना ही दूर हटता जाता है।" प्रगति शील कहे जाने वाले औद्योगिक राष्ट्रों में यह स्थिति सर्वत्र देखी जा सकती है। यन्त्रीकरण से मनुष्य भी यन्त्र की भाँति बन गया है। फल स्वरूप जीवन उबाऊ, नीरस और बोझ भरा प्रतीत होता है। अपनी भाव संवेदना एवं सहजता को खो देने से वह अन्तरंग के सन्तोष और आनन्द की उपलब्धियों से वंचित हो गया है। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण है—इन देशों में बढ़ते हुए मानसिक रोगियों की संख्या जो प्रकारान्तर से शान्ति-संतोष एवं आनन्द के बदले खरीदी गई सम्पन्नता के ही अभिशाप हैं। समृद्धि की उपलब्धि के बावजूद भी पश्चिम की इस स्थिति को देखकर वहाँ के अधिकांश विचारक चिन्तित हैं और कुछ कारगर हल ढूँढ़ने में लगे हुए हैं। अर्थशास्त्री 'शूमाकर ने समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कुछ उपयोगी सुझाव दिये हैं जो औद्योगिकी के सन्दर्भ में हैं तथा हर देश के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनका कहना है कि औद्योगिक नीति ऐसी हो जो प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के भीतर हो ? वे छोटे पैमाने पर काम करने के लिए उपयुक्त हों । मनुष्य की सृजनात्मक प्रवृत्तियों के अनुकूल तथा विकास में सहायक हो । यह सब बड़ी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना द्वारा नहीं छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों की प्रतिष्ठापना से ही सम्भव है ।

'आल्डुअस हक्स्ले' उस तकनीक एवं औद्योगिक नीति को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं जो अधिक से अधिक व्यक्तियों को रोजगार दे, न कि उनके हाथों से काम छीनकर विशाल यन्त्रों में केन्द्रित कर दे ।" उनका कहना है कि इससे न केवल मानवी श्रम का सदुपयोग, रोजगार और सृजनात्मक प्रवृत्तियों के विकास का अवसर मिलेगा वरन् सुख और सन्तोष की दृष्टि से भी आज की तुलना में मनुष्य की स्थिति श्रेष्ठ होगी । औद्योगिक प्रतिष्ठानों से पैदा होने वाली विषाक्तता एवं पर्यावरण असन्तुलनों के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए प्रो० 'लियोपोल्ड कोट्" लिखते हैं कि—स्थायी प्रगति उत्पादन के आधार पर नहीं आँकी जाती वरन् समग्र जीवन को प्रभावित एवं विकसित करने वाले तत्वों से आँकी जाती है । बड़ी मशीनें उत्पादन तो बढ़ाती हैं किन्तु उसी अनुपात में बेकारी को जन्म देती तथा मानवी कौशल को नष्ट करती हैं । उत्पन्न होने वाले प्रदूषण से विभिन्न प्रकार के रोग फैलते हैं । मेरे विचार से छोटी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना में इन समस्याओं से बचाव होगा । इन इकाइयों में लगी पूँजी की लागत की उच्चतम सीमा उतनी होनी चाहिए जितनी कि एक कुशल, प्रवीण श्रमिक की वर्ष पर अथवा दो वर्ष की कमाई होती है । अर्थात् यदि एक श्रमिक दो वर्ष में १० हजार रुपये कमाता है तो छोटे उद्योग में लगने वाली पूँजी १० हजार रुपये के लगभग होनी चाहिए ।"

इस नीति से बड़े उद्योग पतियों के उपर श्रमिकों की पराधीनता घटेगी । साथ ही श्रम, पूँजी और उद्योगों के विकेन्द्रीयकरण का मार्ग प्रशस्त होगा श्रमिक और उद्योग पतियों के बीच चलने वाला शोषण का क्रम बन्द होगा । आपसी मन-मुटाव एवं इससे उत्पन्न होने वाले संघर्ष तथा हड़तालों से प्रति वर्ष होने वाली व्यापक क्षति रुकेगी । गरीब और अमीर के बीच दिन प्रति-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिन बढ़ती हुई खाई पटेगी और समाजवाद, का, मानवतावाद का वास्तविक स्वरूप प्रकट होगा।

इसी तथ्य को प्रख्यात अर्थशास्त्री 'डोरोथी एल. सेयर्य' अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि—श्रम के यन्त्रीकरण की अपेक्षा मानवीकरण करने की दिशा में सोचने एवं स्थायी कदम उठाने से ही प्रगति टिकाऊ बन सकती है। पूँजीवादी देश और पूँजी पति इस नीति के सर्वथा विरोधी होते हैं। फल स्वरूप उनके प्रयास यन्त्रीकरण की दिशा में ही नियोजित रहते हैं ताकि अधिकाधिक व्यक्तिगत लाभ कमाया जा सके। इसका परिणाम यह हुआ है कि वे समृद्ध तो बनते जा रहे हैं किन्तु अपनी मानवोचित विशेषताओं से उतने ही दूर हटते जा रहे हैं। उल्टे चल रहे इस प्रवाह को उल्टा न गया तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य का मूल्य एक यन्त्र से भी कम हो जायेगा क्योंकि भौतिक मूल्याँकन की दृष्टि से यन्त्र कहीं अधिक उत्पादन करने वाला होगा—अपेक्षाकृत के।

समृद्ध देशों के मूर्धन्य अर्थशास्त्री, विचारक प्रगति की एकाँकी औद्योगिक अर्थनीति जिससे मात्र उत्पादन बढ़ता हो किन्तु मनुष्य की मौलिक विशेषतायें, कला-कौशल एवं संवेदनाओं नष्ट होती हों—को देखकर चिन्तित हो रहे हैं। कई देशों में नये सिरे से औद्योगिक नीति निर्धारित करने तथा पुराने ढर्रे में आमूल-चूल परिवर्तन करने के विषय में गम्भीर विचार किया जा रहा है। यह तो समृद्ध और सम्पन्न देशों की स्थिति है, जहाँ बेकारी और गरीबी की समस्या तो नहीं है किन्तु औद्योगीकरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं और उन दूरगामी दुष्परिणामोंको, जो मानवी गरिमाका अवमूल्यन करते हैं—के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

अविकसित, गरीबी एवं बेकारी से ग्रस्त राष्ट्रों के लिए तो समृद्ध देशों की औद्योगीकरण की, अन्धानुकरण की नीति और भी अधिक घातक है। जो गरीब एवं पिछड़े हुए हैं उनके लिए तो ऐसी प्रौद्योगिकी जो उत्पादन तो बढ़ाती है किन्तु मनुष्य के हाथों से उसका श्रम छीनकर दैत्याकार मशीनों के हाथों सौंप देती है—अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हुई है। बहुत समय पूर्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्लमार्क्स जैसे विचारक ने भी इस खतरे को अनुभव किया था, वे लिखते है कि—हम उत्पादन को उपयोगी वस्तुओं तक ही सीमित रखना चाहते हैं। यदि इस सीमा रेखा का उल्लंघन किया गया तो बेकारी बढ़ेगी जो प्रगति की नही अवगति का कारण बनेगी।" महात्मा गाँधी ने भी इस सत्य को अपने शब्दों में व्यक्त किया था कि—"दुनियाँ के गरीब लोगों की सहायता बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाली विशालकाय मशीनों को बढ़ाकर नहीं, उनको बड़ी संख्या में उत्पादन कार्यों में लगाकर ही की जा सकती है।

भारतीय परिस्थितियों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने वाले प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं विद्वान 'आर. एच. कैसने" का कहना है—भारत को विशालकाय औद्योगिक नीति को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। दूसरे देशों में चल रही इस होड़ का अन्धानुकरण प्रगति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकेगा। उल्टे बेकारी और बेरोजगारी अधिक बढ़ेगी। यहाँ के लिए छोटे-छोटे कम उर्जा से चलने वाले कुटीर एवं गृह उद्योग ही प्रगति में सहयोगी बन सकते हैं।"

शहरी बड़े उद्योगों और कारखानों की ओर ताकते रहने की अपेक्षा-असली भारत की ओर ध्यान देना पड़ेगा जो छोटे देहातों में बिखरा पड़ा है। इसके लिए सिंचाई भूमि विकास, वन विकास, विद्युतीकरण, गृह निर्माण, सड़क निर्माण, पशु व्यवसाय, पेय जल पूर्ति, लघु उद्योग विकास जैसी परियोजनाओं को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। हय कार्य नौसिखिये बाबू लोगों की कागजी घुड़दौड़ और ठेकेदारी के नये स्रोत खोल देने भर से पूरे नहीं हो सकते। इन कार्यों पर अब तक करोड़ों रुपया खर्च हो चुका है पर उसका परिणाम देखकर यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि इस प्रयोजन में लगे हुए श्रम, बुद्धि धन तथा साधनों का ठीक उपयोग हो गया।

सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति के लिए अपने-अपने ढंग से जो प्रयत्न हो रहे हैं उनके बाहरी स्वरूप में नुकताचीनी करने की गुंजायश नहीं है, पर एक बहुत बड़ी कमी रह जाती है वह है सचाई और तत्परता की कमी, यह तत्व जब तक पैदा न किया जायेगा प्रचुर प्रयास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और असीम साधन होते हुए भी कोई कहने लायक सफलता स्वप्न के लिए देखते हुए प्रतीक्षा में बैठा रहना पड़ेगा।

साधन स्वल्प होने से भी काम चल सकता है। आवश्यकता चरित्र निष्ठा की है। इस दिशा में मार्ग दर्शन उन्हें करना चाहिए जिन्हें नेतृत्व का अवसर प्राप्त है। उचित और सरल यही है कि अर्थ व्यवस्था से लेकर शिक्षा सुरक्षा तक के सभी क्षेत्रों में लोक नायकों की असंदिग्ध ईमानदारी और कर्तव्य परायणता काम करे। तब नौकरशाही की वे चालें भी निरस्त हो जायेंगी जो सरकारी धन और जनता की सुविधा से खिलबाड़ करती रहती है और प्रगति के रथ को आगे बढ़ने देने की अपेक्षा पीछे ही घसीटती हैं।

असावधान नेतृत्व जनता में नव चेतना उत्पन्न नहीं कर सकता और असावधान जनता पर से असावधान नेतृत्व का लदा भार हलका नहीं हो सकता। हमें सर्वतोमुखी सतर्कता और प्रखरता उत्पन्न करनी होगी जिसका सबसे पहला कदम होगा चरित्र निष्ठा की पुनः प्राण प्रतिष्ठा। यह सरकारी और गैर सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से आवश्यक है। इस आवश्यकता को पूरा किये बिना हम आर्थिक प्रगति का स्वप्न पूरा न कर सकेंगे।

देश की समृद्धि एवं समुन्नति में यह दूरदर्शी नीति ही सफल हो सकती है। इससे मात्र बेकारी समस्या का हल ही नहीं उन खतरों से भी बचाव होगा जिनसे इन दिनों औद्योगिक राष्ट्र अत्यन्त चिन्तित हैं। जिससे सबको भरपूर श्रम करने, अपने बुद्धि कौशल को नियोजित करके आन्तरिक सन्तोष, प्रसन्नता एवं आनन्द की अनुभूति करने का सुअवसर मिले—ऐसी औद्योगिक नीति ही सफल एवं सार्थक है।

★

क्र०१६८ प्र०-युग निर्माण योजना मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा मू०-४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org